राजकुमार श्रेणिक

वैभार गिरी आदि पाँच पर्वतों की तलहटी में बसी मगध देश की राजधानी का नाम था कुशाग्रपुर। राजा प्रसेनजित वहाँ के शासक थे। वे २३वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के उपासक और बड़े वीर योद्धा थे। प्रसेनजित की कई रानियाँ थीं जिनमें प्रमुख थी कलावती। राजा के १०० पुत्रों में सबसे बड़ा पुत्र था श्रेणिक।

एकबार राजा प्रसेनजित की सभा में सिंध प्रान्त के सौदागर तरह-तरह के घोड़े लेकर आये। घोड़े देखकर राजा ने कहा–

सौदागर ने एक सफेद रंग का चपल घोड़ा राजा के सामने पेश किया।

प्रसेनजित घोड़े पर सवार हुए। एड़ लगाई कि घोड़ा हवा में तैरता दिखाई दिया। कुछ ही देर में घोड़ा नगर सीमा से बहुत दूर भयानक जंगल में पहुँच गया।

घोड़े की तेज गति से घबराकर प्रसेनजित ने ज्यों ही लगाम खींची, घोड़ा झटके से रुक गया। प्रसेनजित धड़ाम से जमीन पर गिर पड़ा।

एक सुन्दर कन्या पानी का घड़ा लेकर उधर से आ रही थी, उसने जमीन पर गिरे मूर्च्छित राजा को देखा तो राजा के मुँह पर शीतल पानी छिटका। राजा ने आँखें खोलीं। प्यास के कारण उससे बोला नहीं जा रहा था, उसने इशारों से समझाया–

कन्या ने फुर्ती से पास के वृक्षों से कुछ फल तोड़े। राजा फल खाना तो भूल गया और अल्हड़ सुन्दरी कन्या के रूप को निहारने लगा।

फिर उसने कन्या से पूछा–

यहाँ से कुशाग्रपुर कितना दूर है ?

अरे बाबा, कुशाग्रपुर तो यहाँ से बहुत दूर है, अब तो अंधेरा भी घिर रहा है, तुम इस बीहड़ वन में रात को भटक जाओगे।

उस पहाड़ी पर हमारी छोटी-सी कुटिया है। चलो तुम रातभर वहीं विश्राम कर लेना।

कन्या प्रसेनजित को अपनी कुटिया के पास ले आई। उन्हें देखकर कुटिया में से एक सुदृढ़ शरीर वाला व्यक्ति बाहर आया। उसने आगे बढ़कर राजा प्रसेनजित का स्वागत किया।

इस भील पल्ली का स्वामी यमदण्ड आपका स्वागत करता है।

राजा प्रसेनजित ने अपना परिचय दिया और पूछा–

यह लड़की कौन है ?

यह मेरी इकलौती पुत्री तिलकवती है।

राजा प्रसेनजित ने रात भर वहीं कुटिया में विश्राम किया।